आपातकाल में सृजन फुलवारी

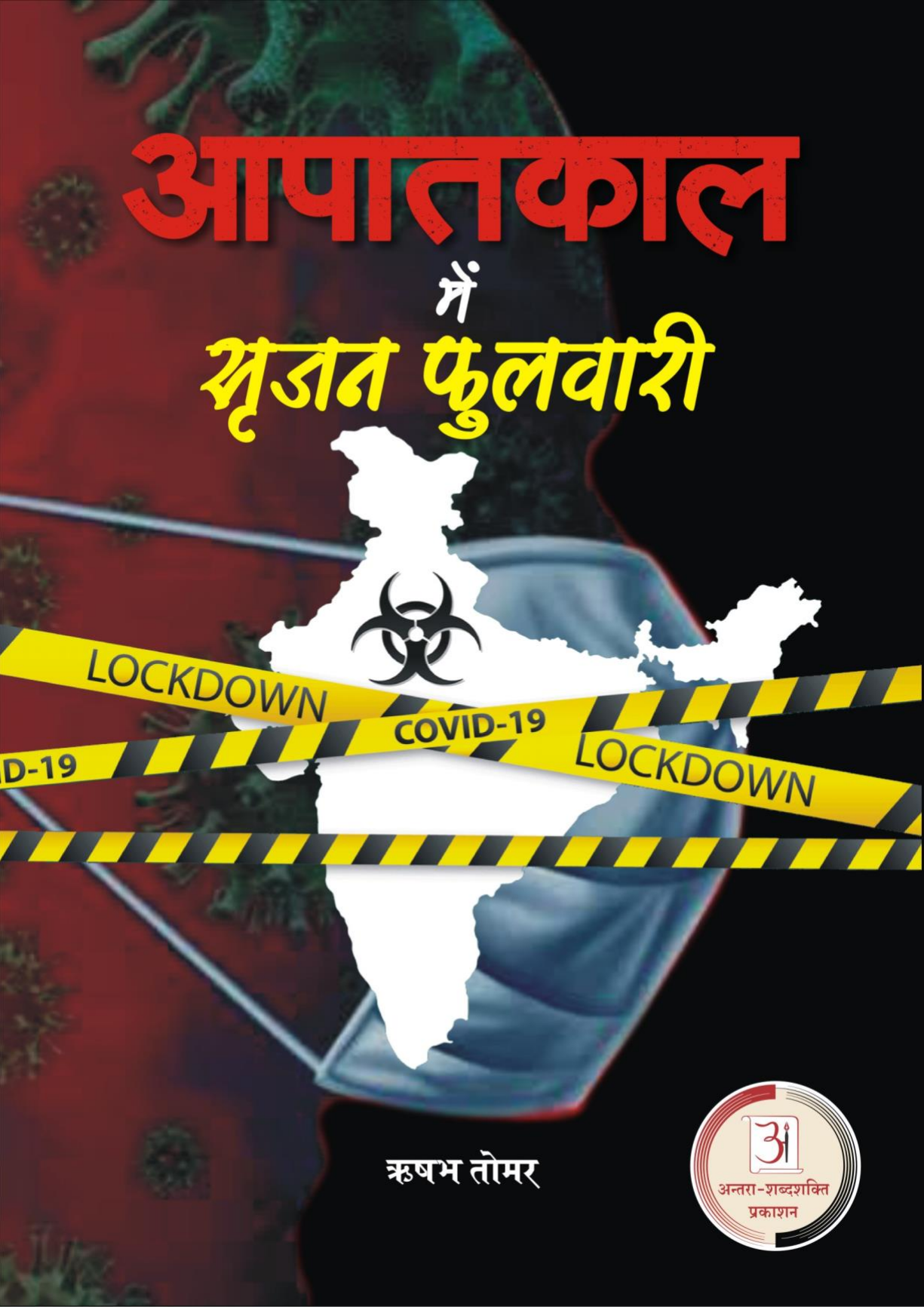

ऋषभ तोमर

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

ऋषभ तोमर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-135-0
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 ऋषभ तोमर
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY RISHABH TOMAR
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	तेरी मुस्कान	6
2.	दर-बदर	7
3.	हमारे घर नहीं होते	8
4.	मित्र चाहे एक हो	9
5.	बचपन वाली मोहब्बत	10
6.	जिंदगी हमको बताती है	11
7.	मेरी प्यारी बहना	12
8.	हमजोली	13
9.	याद	14
10.	सुबह की धूप	15
11.	संगीत	16
12.	भाई वही तो होता है	17
13.	हिंदुस्तान	18
14.	वृक्षरोपण	19-20
15.	आशा से आकाश थमा	21

तेरी मुस्कान

तेरी मुस्कान से ये दुनिया प्यारी तो नही है
पर ये बता मारने की मुझे तैयारी तो नही है

जिसे देखो उसे अपना शिकार बना लेती है
ये जो तुम्हारी नजर है वो शिकारी तो नही है

मुरझाया चेहरा आंखे लाल लाल ये तो बता
हमारी तरह रोकर कही रात गुजरी तो नही है

जिसे सुनकर ये सारी महफ़िल झूम उठी है
वो गजल लिख्खी हमारी तुम्हारी तो नही है

फाकाकशी में भी फाकमस्त रहते है हम तो
यूँ मुफ़लिसी में नाम मेरा भिखारी तो नही है

अजीज न तो बहिश्त है न तन्हाई का मलाल
बस खुशी है जिंदगी रोकर गुजारी तो नही है

मोहबत में हार कर भी देवदास की तरह
मय में डुबा के जिंदगी हमने हारी तो नही है

हकीर हो या जहनुम से बत्तर हो मेरी दुनियाँ
जैसे भी है अपनी है जनाब उधारी तो नही है।

दर-बदर

गर हूँ दर-बदर तो हुआ क्या है
इश्क में जख्मों के सिवा क्या है

बातो में ख्याबो में सांसो में वो है
उसके सिवा मुझमें बचा क्या है

अजीब बीमारी फैली है इश्क सी
सभी पूछते है इसकी दवा क्या है

प्रेमी, पागलों और शायरों के पास
फाका मस्ती के सिवा मिला क्या है

गर जिश्म न हुआ लहू का पैराहन
तो फिर बता इश्क ए बफा क्या है

बस दो घूँट मय बना देती है खुदा
पीने वाला बोलता है खुदा क्या है

एहतराम से कहता हूँ रिश्ते न बना
साथ चाकू छुरी खंजर बता क्या है

बहुत हँसते हो बिन वजह के ऋषभ
इश्क में हार या धोखा मिला क्या है।

हमारे घर नहीं होते

उनकी मेहनत के बिना ये उन्नत शहर नहीं होते,
वो नहीं बनाते पसीने से तो हमारे घर नहीं होते।

वो आज सड़कों पर दर- दर भटक रहे हैं यहाँ
बहुत दुःखद है मगर सच है उनके घर नहीं होते।

भौतिकता की चाह में हम न खेलते नटी से तो
ये कोरोना या अन्य विपदाओं के डर नहीं होते।

जरा भी मांस का होता जो दिल शहर वालों का
तो सड़कों पर भटकते लाखों ये बेघर नहीं होते।

बन स्वामी हमने प्रकृति को सताया है बहुत प्यारे
पुत्र बनते हम अगर तो ये कर्फ्यू कहर नहीं होते।

मैं बस इतना कहूँगा सहायता करने में न रुकना
अगर हो सामने बेबस या जिनके दर नहीं होते।।

मित्र चाहे एक हो

मित्र चाहे एक हो पर नेक होना चाहिये
प्यार भाईचारे का संग सेक होना चाहिये

ये तो जरूरी है नही वो रोज अपने संग रहे
दिल से निभाये दोस्ती ये विवेक होना चाहिये

लाखो हजारों की ज़रूरत पड़ नही सकती हमें
कर्ण सा जीवन मे केवल एक होना चाहिये

छोड़ पद वैभव पखारे नैंन जल से पांव जो
कृष्ण जैसा मीत तो प्रत्येक होना चाहिये

मैं सदा गिरिधर से माँगू मीत कान्हा सा मिले
ताकि हममें प्यार राधे अनेक होना चाहिये।

बचपन वाली मोहब्बत

जिंदगी कुछ इस तरह हमे तोड़ गई
बचपन वाली मोहब्बत हमे छोड़ गई

बाजारों की तरफ नही जाते है रास्ते
वो सबको जंगलो की तरफ मोड़ गई

दुःख दर्दो से किसी को प्यार नही था
वो उनके साथ में मेरा नाता जोड़ गई

जो बनाये थे ख्याबो में प्यार के महल
एक पल में वो सबको हँस फोड़ गई

वो बन गई किसी एक पुल की तरह
ऋषभ मेरी जिंदगी भी बन रोड़ गई

जिंदगी हमको बताती है

किस तरह ये दुनिया पल पल आजमाती है
ये सच्चाई हर दिन जिंदगी हमको बताती है

जहाँ पे भी लिखा है उसे जला दो, मिटा दो
कि सच्ची मोहबत एक दिन लौटकर आती है

कैसे कह लूँ ख़ुद को बताओ सुखनवर दोस्तों
मुझसे हर एक हर्फ़ तो उसकी यादें लिखाती है

राधा कृष्ण सीता राम से लेकर आज तक देखा
सच्ची मोहबत जिसे भी हुई उसको तड़पाती है

ये असंगति आज तक नही समझ पाया हूँ मैं
कि मोहबत आकर के फिर दूर क्यो जाती है

मेरी प्यारी बहना

तितली चाँद सितारों सी तेरा क्या कहना
मेरी बहना मेरी बहना मेरी प्यारी बहना

तुम संग छुपन छुपाई और झगड़ा करना
जीवन तुझ संग खुशियां से अपना भरना
करना गलती बात बात पे तुझ संग प्यारी
फिर घरवालों से पीटना और मेरा डरना
लेकिन फिर भी सोचे मन ऐसे ही रहना, मेरी बहना,.....

राखी को चाहत से मेरे हाथों पे सजाना
फूलों सा मुझको तेरा हँस हँसके खिलाना
मेरी गलती को ख़ुद की गलती कहकर
रिश्ता भाई बहन का ये सिद्दत से निभाना
जीवन भर चाहूं तुझ संग धारा सा बहना, मेरी बहना,.....

चंदन, कुमकुम, रोली, की थाली जैसी
मेरे जीवन मे तुम हो किसी माली जैसी
गेंदा चमेली सूर्यमुखी गुड़हल की तरह
तुम हो मधु गन्ध सुगन्ध युक्त डाली जैसी
बस इतना कहूँ तुम हो जीवन का गहना, मेरी बहना,.....

प्राची सी लाली मुख पर है तेरे सजती
कोई कमी कही नही है तुझमें बचती
जब ओढ़ी चुनरिया तूने ये शादी वाली
रति, उर्वशी, रंभा ये सब फीकी लगती
पर चाहे न कोई भाई विदाई तेरी सहना, मेरी बहना,.....

हमजोली

गीत लबों पर छा जाते है होली में
प्यार उतर आता है प्यारे बोली में

सूना सूना मन भी इस दिन अपना
रंग जाता है प्यार भरी रंगोली में

लाल गुलाबी पीले नीले रंग के संग
पैर थिरक उठते है हास ठिठोली में

और हथेली जब गुलाल से भर जाती
गालों को चूमे तब प्रेम की होली में

ढोल नगाड़े बजते मन के आंगन में
और झूमता मन बन दुल्हन डोली में

बैर भेद सब मिट जाते रंग के संग
हिन्दू मुस्लिम रखते रंग है झोली में

काश तिलक माथे पर मेरे कर जाये
बाँध हृदय को मेरे प्यार की मोली में

खिड़की पर बैठी वो ऋषभ क्या देखे
छंद हृदय पे लिख दे आ हमजोली में।

याद

रातों में याद मुझको रोज आ रहे हो तुम
फिर सारी रात मुझको जगा रहे हो तुम

तकदीर में भले ही मेरे तुम न लिख सके
गजलों में मेरी रोज लिखे जा रहे हो तुम

नदियाँ ये झील भवरें फूल ,यूँ ही न लिखे
इन नामो से गजल में पढ़े जा रहे हो तुम

कल तक जुबा पे मेरी तुम राज करते थे
ख्याबो में आज आके इतरा रहे हो तुम

गलियों को आज चाँद सितारों से सजा दो
मैंने सुना है लौट आज आ रहे हो तुम

मुस्कान दो या ठहाके लगाओ यहाँ मगर
आंखे बता रही है कि पछता रहे हो तुम

आकाश सा विशाल है दिख जायेगा मुझे
जो सीने में राज अपने दफना रहे हो तुम

मर जायेगा ऋषभ पर यह सह न पायेगा
आँखों से गंगा यमुना जो बहा रहे हो तुम

सुबह की धूप

आनंदित उर को करे, मधुर सुबह की धूप
स्वर्णिम रश्मि दे रही, जग को अनुपम रूप

हरित वसन बसुधा सजे, तुहिन मोतियन माल,
चूँ चूँ ची ची बोलके, खग कुल करे निहाल,
शुभ्र रजत लिपटे हुये, पर्वत लगते भूप,
स्वर्णिम किरणे दे रही, जग को अनुपम रूप।

खन खन कर बजने लगा, खेतो से मृदु साज,
कोकी कोयल बुलबुले, करती मधुर आवाज,
रजनी तारा घट लिये, बोरे अम्बर कूप,
स्वर्णिम किरणे दे रही, जग को अनुपम रूप।

कलियाँ दृग को खोलके, देती है मुस्कान,
तितली भोरे देख इन्हें, आनंदित भरे उड़ान,
हर जन भी संकल्पित होके, सपनों को देता स्वरूप,
स्वर्णिम किरणे दे रही, जग को अनुपम रूप।

बाग झील उपवन नदी, यौवन की दहलीज,
वन पर्वत घाटी समतल, लगे सुंदरता के बीज,
प्राची क्षित लाली लगे, किसी दुल्हन का प्रतिरूप,
स्वर्णिम किरणे दे रही, जग को अनुपम रूप।

धरती दुल्हन सी लगे, पा नभ प्रिय का स्पर्श,
परिवर्तन दिखने लगे, पाके दिनकर के दर्श,
खग मृग संग जग भी लगे, सबको अपने अनुरूप,
स्वर्णिम किरणे दे रही, जग को अनुपम रूप।

संगीत

सुर है सुधा, संतुष्टि है संगीत जगत में
देता है ये अमरत्व वो है मीत जगत में

जीवन की धूप से बचा देता ये छाव है
लगता सदा ऐसा कि प्रेम का ये गाँव है
दुख दर्द चिंता त्रास से शांति डगर का
बचता ही ये संगीत तो बस ठहराव है
पवन है पवित्र, पुण्य है प्रीत जगत में, देता है ये अमरत्व,.....

संसार को सदा ही जीवन तत्व देता है
जाकर के कर्णों में सदा मतत्व देता है
हारे थके अकेले विरही को ही नही ये
सम्पूर्ण जगत को ये तो अपनत्व देता है
मंजिल है, मृदु मंत्र है मनमीत जगत में, देता है ये अमरत्व,.....

विरही के दिल से निकलती ये आह है
राधा ने कृष्ण से करी पावन ये चाह है
गर हो गलत जो कुछ तो बोल दे गलत
संगीत सत्य बोलने की पावन सी राह है
न जुर्म है न जाम ,ये है जीत जगत में, देता है ये अमरत्व,.....

ये आत्मा परमात्मा को एक ही करता
संसार का ये सार स्वयं में ही है भरता
राजा हो रंक हो या कोई तानाशाह बड़ा
बनके कबीर मस्त किसी से नही डरता
निर्बल का हुआ बल सदा गीत जगत में, देता है ये अमरत्व,.....

भाई वही तो होता है

मुश्किल में वक्त साथ निभाये भाई वही तो होता है
गम को भी खुशियाँ कर जाये भाई वही तो होता है

सारी दुनिया देख लोग जब हमसे किनारा कर जाए
तब आगे बढ़ जो साथ निभाये भाई वही तो होता है

जोकर बन या बनकर पागल, उल्टी-सीधी हरकत कर
चेहरे पर खुशियों को सजाये भाई वही तो होता है

गलती होने पर भी जो जन कुम्भकर्ण सा बन जाये
और भगवान से जा टकराये भाई वही तो होता है

धन दौलत की बात नही जो राज पाठ को भी तज दे
और भरत बन वन को धाये भाई वही तो होता है

बहना की रक्षा की खातिर तोड़ के सब मर्यादा जो
मन मोहन बनके चीर बढाये भाई वही तो होता है

अपने हिस्से की टॉफी भी अपनी बहना को देकर
जो नाचे गाये धूम मचाये भाई वही तो होता है

मुश्किल में जो साथ निभाये भाई वही तो होता है
अपनी खातिर जो लड़ जाये भाई वही तो होता है

हिंदुस्तान

काश इस तरह हमारी पहचान होने लगे
शंख बजने लगे साथ ही अजान होने लगे

हिन्दू-मुसलमान होते है तो हो जाये वो
लेकिन दिल से सभी लोग इंसान होने लगे

एकता अखण्डता के सूत्र में हम यूँ बंधे
कि एक आरे में गीत व कुरान होने लगे

न कहनी पड़े गुलजार को आजदी गलत
हिंदुस्तानी रहे, न हिन्दू मुसलमान होने लगे

मजहब हो देश मे वो भी जरूरी है ऋषभ
पर मजहब से पहले हिंदुस्तान होने लगे।

वृक्षरोपण

भौतिकता की चाह में हमको,
वसुधा का भी ध्यान नही है
काट रहे है वन सब मिलकर,
शायद जीवन का ज्ञान नही है

जहर घुल गया है दुनिया में,
सांसो में कालिख बसता है
जो भोजन जीवन देता था,
आज हो दूषित वो डसता है

लाखो जीवो के है घरौंदे,
इस वैभव की नींव के नीचे
अंधा मानव देख हँस रहा,
अपने यहाँ नयन है मीचे

बंजर पन बसुधा पे छाया,
कौन यहाँ मेघ को खींचे
समझ नही आता है कैसे,
कुछ जन नयन नीर से सींचे

नीड़ ध्वस्त है वन समतल है,
रहने का कुछ नही ठिकाना
जीवो की रक्षा करने का,
भूल गये संकल्प निभाना

बाढ़ भूस्खलन भूकम्पों का,
संकट आ सकता है कभी भी
भवन कलाकृति जैसे नश्वर,
वैभव में तुम खुशी अभी भी

लाखों बेघर जीवो की आहे,
मत लो अब तो कर दो बस
सब पाप तुम्हारे धुल जायेंगे,
वृक्ष लगाओ बस तुम दस

इन वृक्षों के रोपण से केवल,
पश्चात न होगा भाई
उनका लालन पालन तुझको,
करना होगा बनकर माई

वरना ऋषभ मिटेगा जीवन,
कभी कोरोना कभी अन्य से
अपना लोगे गर वृक्षरोपण,
तो बने रहोगे धन्य-धन्य से।

आशा से आकाश थमा

मानव जीवन तप करके के ही साथी जग में फलता है
जैसे कांटो बीच जगत में फूल गुलाब का खिलता है

भक्ति की शक्ति से ईश्चर खुद आगे आ जाता है
जैसे नदियाँ से मिलने को सागर रोज मचलता है

कोमलता के बल से देखो रस्सी की ताकत साथी
पनघट पर घिसने से उसके पत्थर रोज पिघलता है

आशा की किरणों से साथी सब मुमकिन हो जाता है
जैसे पाहन तोड़के दरिया कल कल अविरल चलता है

इस जीवन मे राह न हो पर फिर भी आगे बढ़ जाना
क्योंकि चीर के बादल जग में आशा सूर्य निकलता है

खुशियाँ को पाकर जो प्राणी दंभ से जग में भर जाता
उसी समय से खुशियों का भी उसका सूरज ढलता है

सीधे खड़े वृक्ष है जो भी सबके सब समझो पतझड़
लेकिन झुका वृक्ष ही साथी जग में हर दम फलता है

नभ छूने की आतुरता से जो भी आगे निकला है
मंजिल देख देखकर उसका साथी लहू उबलता है

आशा से आकाश थमा है, हिम्मत से धरती प्यारे
और प्यार के बंधन से ये सारा जग भी पलता है

ऋषभ अगर तूफानों से लड़ने की हिम्मत पास रही
पौरूष की उस ज्वाला से लोहा पल में पिघलता है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार
कृषभ तोमर
अम्बाह, मुरैना
E-mail - radhetomar112@gmail.com
Mobile - 7898262200

मैं एक सामान्य ग्रमीण परिवार से हूँ। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव मे ही सम्पन्न हुई। बचपन से ही मुझे क्रिकेट खेलने का बहुत शौक था लेकिन भविष्य पढाई आदि के तानों के कारण मुझे अपनी पहली मोहब्बत क्रिकेट छोड़नी पड़ी। लेकिन इससे हमें एक नया शौक पड़ गया किताबे पढ़ने का और मैने अम्बाह स्नातकोतर महाविद्यालय में अध्ययन के लिये प्रवेश लिया।और लेखन का प्रारंभ हुआ द्वितीय वर्ष से जहाँ लाइब्रेरी में बैठकर हमने लेखन की दृष्टि से नही वैसे ही कुछ पँक्तियाँ लिखी श्चंदन रोली कुमकुम की थाल है बेटियाँश और हम वहीं छोड़कर चले गये हमारी ये पंक्तियाँ हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डह. शशिवल्लभ शर्मा जी को मिली जिन्हें हम कविता गुरू के नाम से पुकारते है। हमने उनके सानिध्य में कविता लेखन प्रारंभ कर दिया। फिर हमें काव्यप्रेमियों की महफिल समूह में जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ भी हमने अपनी पहली रचना भेजी और हेमन्त भैय्या ने हमे अन्तरा शब्दशक्ति से जोड़ दिया। चूँकि हम रचनाकार तो थे नही इसलिए हम निष्क्रिय रहे लेकिन हमने अंतरा शब्दशक्ति समूह से बहुत कुछ सीखा उधर शशि सर ने हम पर पूरा ध्यान रखा। आज हम लिख लेते है जिसे लोग पढ़ सकते है। उसका अर्थ निकाल सकते। इसके अतिरिक्त हम आज भी खुद को कवि नही मानते सिर्फ उस राह पर जाने वाला पथिक मानते है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-135-0
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/